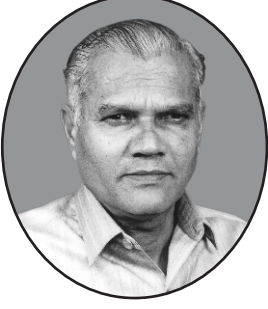


जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक



# जैव जागृति

(Since 1969)

www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा  
समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.

☎ : (०२०) २४२१५५८३

मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया

संपादिका : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖

स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५० वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०१९ ❖ वीर संवत २५४५ ❖ विक्रम संवत २०७५

या अंकात	पान नं.	पान नं.
● वाचकांचे मनोगत.....		● मृत्यु को महोत्सव बनाएँ ६४
जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण	१५	● पल पल लिजिए जीवन का आनंद ६५
● मृषावाद	१९	● चलती रहे जिंदगी -
● आईचा पगार किती ?	२२	आनेवाला पल जानेवाला है ७५
● जैन कॉन्फ्रेंस - श्री. पारस मोदी		● उद्याच्या सूर्यासाठी ८५
शपथ विधी समारोह, अहमदनगर	२३	● काम करो ८७
● कव्हर तपशील	२४	● स्व समुपदेशन :
● ॥ जिनेश्वरी ॥		नव वर्षाचा रोजनिशी संकल्प ८८
अध्याय ३२ : प्रमाद स्थान	३१	● हास्य जागृति ८९
● जैन धर्म णमोकार की बात करता है		● भारतीय जैन संगठना - राष्ट्रीय अधिवेशन ९५
जयकार की नहीं	४१	● अनोखे व्यक्तिमत्त्व - सौ. सुलभा भंडारी, पुणे ९६
● ऐसी हुई जब गुरुकृपा -		● महाराष्ट्र राज्य - अल्पसंख्याक विकास विभाग ९९
एवंता ज्यूं नाव तिरा	४३	● दि पूना मर्चटस् चेंबर - राज्यव्यापी परिषद १००
● दुःखी होने के १० कारण	४५	● राजभवन में शाकाहार १०१
● सुवर्णकार - श्री. विजयराजजी रांका	५१	● धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा १०१
● एक छोटी सी बात	५७	● जैन कॉन्फ्रेंस - श्री. पारसजी मोदी अध्यक्षपदी १०३
● विराट वागराणा	५९	● विजय वल्लभ स्कूल, पुणे १०४

● दंत वैद्य डॉ. अभिषेक सोनी - पुरस्कार	१०५	● ग्रंथ परिक्षण - जैन आगमों का विज्ञान	११८
● डॉ. सुधा कांकरिया, अहमदनगर	१०६	● चोरडिया महासम्मेलन	११९
● श्री. रमेश फिरोदिया कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर	१०६	● वीतराग सेवा संघ, पुणे	११९
● आनंद अचल गुरु फाऊंडेशन, पुणे	१०७	● विश्वानंद केंद्र, पुणे	१२३
● सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे - डॉ. संजय चोरडिया पुरस्कार	१०९	● प्राणायाम	१२४
● मानव मिलन महिला विभाग, पुणे	११७	● नकारात्मक दृष्टिकोन से बचे	१२८
● डायग्नोस्टिक सेंटर, हडपसर, पुणे	११७	● कर्म सिध्दांत	१२९
● परिवार में मध्यस्थ भावना	११८	● विविध धार्मिक व सामाजिक बातम्या	

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५०० रु.
या अंकाची किंमत ५० रुपये.		<ul style="list-style-type: none"> <li>● www.jainjagruti.in</li> <li>● www.facebook.com/jainjagrutimagazine</li> </ul>			

## सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतिप्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वतः जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

**BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI**  
**Bank : STATE BANK OF INDIA** **Branch : Market Yard, Pune 37.**  
**Current A/c No. : 10521020146** **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Raturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षित आहेत.

## जैन जागृति मासिकात जाहिरात व वर्गणीसाठी संपर्क करा

फोन (०२०) २४२१५५८३ मो. संजय:९८२२०८६९९७ सुनंदा:९४२३५६२९९१, www.jainjagruti.in  
Email : jainjagruti1969@gmail.com • Press Email : prakash.offset@rediffmail.com

### ◆ जैन जागृतिचे प्रतिनिधी ◆

- ❖ भोसरी, चिंचवड, निगडी - श्री. चांदमलजी लुंकड - फोन : २७११९९४९, मो. ९९२१९१९४०९
- ❖ पुणे शहर ❖ कुर्डुवाडी - श्री. सुभाष मोहनलाल लुणिया, मो. ८७९३००००८१
- ❖ गुरूवार पेठ, पुणे - श्री. जैन पुस्तक भंडार, फोन : २४४७२९५८
- ❖ धनकवडी, पुणे - श्री. सुरेंद्र हिरालालजी बोरा, मो. ७५८८९४३०१५
- ❖ महावीर प्रतिष्ठान, पुणे - निलम रमेशचंद्र शहा, मो. ९०९६८००५४७
- ❖ सदाशिव पेठ परिसर, पुणे - सौ. स्वाती राजेंद्रजी कटारिया, मो. : ९८८१२०४३९०
- ❖ वडगाव शेरी, पुणे - सौ. भारती सुभाष नहार, मो. : ९८९०२७८३४६
- ❖ वडगाव मावळ, पुणे - श्री. राजेंद्र बाफना, मो. ९८२२२६२९०१
- ❖ खडकी, पुणे - श्री. विलास मुथा, मो. ९६२३१४८९८४
- ❖ औंध, पाषाण, हिंजवडी, सांगवी, थेरगाव - श्री. शिरीषकुमार शांतीलालजी डुंगरवाल, मो. ९०२१३००५५९
- ❖ दापोडी, पुणे - श्री. प्रवीण झुंबरलालजी चोरडिया, मो. ९९२२७५७७०६
- ❖ नांदेड सिटी, पुणे - श्री. प्रकाशजी हरकचंदजी बोथरा, मो. ९०११९८३६६६
- ❖ दौंड, श्रीगोंदा - श्री. रविंद्र चैनसुखलालजी गुगळे - ९८९०७२३४०२
- ❖ अहमदनगर - श्री. महेश एम. मुनोत- मो. ९४२०६३९२३०
- ❖ जामखेड, आष्टी व कर्जत तालुका - श्री. प्रफुल शांतीलालजी सोलंकी - मो. ९४०३६८५६७७, ८०८७७०००७०
- ❖ सोनई - श्री. मदनलालजी सी. भळगट - फोन : ०२४२७-२३१४६१, मो. ९८८१४१४२१७
- ❖ औरंगाबाद - श्री. सुभाषचंदजी मांडोत-फोन: (०२४०) २३५३४३८ मो.: ९४२२७०५९२१
- ❖ मुंबई खारघर- श्री. मदनलालजी गांधी-मो. ९८२०५३६७९३
- ❖ नाशिक - श्री. पुखराजजी बाबुलालजी जैन (कवाड) फोन:०२५३-२३११००८,मो.९४२३९३९९९०
- ❖ नाशिक - मनोज लखीचंदजी खिवसरा, रविवार पेठ, नाशिक. मो. ९७६२२२१५०५
- ❖ गारगोटी (जि. कोल्हापूर) श्री. श्रीकांत राजाराम शहा, मो. ९८६०१०७७९२
- ❖ श्रीरामपूर -श्री. निलेश सुवालालजी हिरण, मो. : ९३२६९७२७४७
- ❖ बारामती- डॉ. महावीर छगनलालजी संचेती, फोन : ०२११२-२२३८०७ मो.:९३२५००४९५०
- ❖ अमळनेर, जि. जळगाव - श्री. मयुरकुमार केवलचंदजी जैन, मो. ९४२२६५७१७७
- ❖ जळगाव - श्री. अनील कुचेरिया, मो. : ९७६३६४५०५५
- ❖ धुळे - श्री. चेतन सतिष कोटेचा, सुभाषनगर, धुळे, मो. ९४०४१९२४३४, ९४२०६६१४२६
- ❖ शहादा, जि. नंदुरबार - श्री. मनोजकुमार विरचंदजी बाफना, मो. ९४२१५२९६२६
- ❖ इचलकरंजी, जि. कोल्हापूर - श्री. पोपटलालजी बिसनदासजी गुगळे, मो. ९८२२६५०९९८
- ❖ मिरज, जि. सांगली - श्री. राजेंद्र वसंतलाल शहा, मो. ९४२११०५७४८
- ❖ कोल्हापूर - सौ. लता कांतीलालजी ओसवाल, मो. ९४२३२८६०१४ फोन.०२३१-२६९५४३३
- ❖ सातारा व सातारा जिल्हा - श्री. जयकुमार कांतीलाल शहा, वाठार, मो. - ७५८८५६१३२०, ९८५०१८२६४४

## ॥ वाचकांचे मनोगत ॥ जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण...



जैन जागृति - गोल्डन ज्युबिली वर्षातील पहिला अंक, सप्टेंबर २०१८ पर्युषण अंका पासून वाचकांचे मनोगत 'जैन जागृति ५० व्या वर्षात पदार्पण' या सदरात दरमहा आचार्य भगवंत, साधु-साध्वी महाराज, समाज बांधव यांचे आलेली पत्रे जैन जागृति प्रकाशित केली जात आहेत. या सदरात प्रकाशित करण्यासाठी बरीच पत्रे, संदेश आमच्याकडे आली आहेत. यापैकी दरमहा पाच पत्रे प्रकाशित केली जातात. सर्व पत्रे क्रमशः प्रसिध्द केले जातात. - संपादक

### आचार्य श्री शिवमुनिजी म.सा. का जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद

#### मंगल संदेश



यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुई कि 'जैन जागृति' मासिक पत्रिका का गोल्डन जुबली वर्ष मनाया जा रहा है। जैन समाज में सैंकड़ों पत्रिकाएँ चलती है। लेकिन बहुत थोड़ी पत्रिकाएँ लम्बे समय तक चल पाती है। संस्थापक स्व. श्री कांतीलालजी चोरडिया ने इस पत्रिका को दो भाषा में निरंतर प्रकाशित किया। मराठी

व हिन्दी भाषी पाठकों को पठनीय चिन्तनशील सामग्री प्रदान करते रहे। समय-समय पर विशेषांक भी प्रकाशित होते रहे। दिपावली विशेषांक अपने आप में अनुपम होता है। आपकी पत्रिका जिनशासन की प्रभावना करती रहे। समयानुकूल सामग्री पाठक तक पहुँचती रहे। स्वर्ण महोत्सव कार्यक्रम पर हार्दिक शुभकामना।

सहमंगल मैत्री

आचार्य शिवमुनि  
चातुर्मास - उदयपुर, राजस्थान

### आचार्य श्री महाबोधी सुरिश्वरजी म.सा. का जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद



सुश्रावक संजयभाई चोरडिया  
धर्मलाभ !

परमात्मा की कृपा से  
हम सभी सुखसाता में हैं।

जैनजागृति अंक सुवर्ण  
वर्ष में प्रवेश कर रहा है, यह

खुशी की बात है।

मोबाईल, वॉट्सअप, फेसबुक, इन्टरनेट, यु ट्यूब वगैर सोशल मिडिया के इस जमाने में बहुत सारे मेगज़िन, पत्रिका बंद होने जा रही है, या ऑक्सिजन पे चलती है, तब भी जैन जागृति प्रतिमास भरपुर सामग्री के साथ प्रकाशित होता है, यह अपने आपमें बड़ी बात है।

एकवीसवी सदी भोग/सुख/विलास की है। ऐसे समय में धर्म, संस्कार एवं वैराग्य के लेखोंसे जैन जागृति अंक आनेवाले समय में और समृद्ध बने यही मंगल कामना।

महाबोधीसूरी के धर्मलाभ,  
चातुर्मास - अहमदाबाद

**पू. श्री विशालऋषिजी म.सा.  
जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद**



जय महावीर ! जय आनंद !  
धर्म प्रेमी संपादक  
महोदय जैन जागृति  
सादर धर्मसंदेश !  
आचार्य सम्राट पू श्री  
आनंदऋषिजी म. सा. का

आशीर्वाद लेकर पिताजी ने करीबन १९६९ में जैन जागृति का छोटासा पौधा लगाया था आज वह पौधा ५० वर्षों में विशाल वटवृक्ष बन गया है ।

हमारे संजय भाऊ एवं सुनंदा भाभी के अथक परिश्रम से जैन जागृति संपूर्ण भारत देश के कोने-कोने में पहुँच रहा है । जैन जागृति नई पिढी को सुसंस्कार देनेवाली मासिक पत्रिका है । विशेष यह जैन जागृति ऑन लाईन के माध्यम से पूरे विश्व में पहुँच चुकी है इस पत्रिका को बेस्ट जैन मासिक पुरस्कार मिला है ।

इस जैन जागृति के माध्यम से अनेकों की अनेक समस्या का समाधान सहज हो जाता है । मंगल कामना करते हैं कि जैन जागृति परिवार की प्रगती हो यही शुभ कामना

पू श्री विशालऋषिजी - पुणे चातुर्मास

**साध्वी श्री जागृतिजी म.सा.  
जैन जागृति पत्रिका को आशीर्वाद**



जय महावीर !  
धर्मप्रिय सेवाभावी सभी  
के हितचिंतक संजयभाऊ एवं  
सुनंदा भाभी को तथा  
जैनजागृति परिवार को धर्म  
ध्यान का शुभ संदेश !

विशेष यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जैन जागृति

मासिक पत्रिका ५० वे (सुवर्ण वर्ष में) प्रवेश कर रही है।

जैन जागृति पत्रिका की शुरुवात आज से पचास वर्ष पहले दीपक की लौ से हुई थी आज सूरज की रोशनी तक पहुँच चुकी है । पत्रिका हर वर्ष बहुत सी निकलती है कुछ वर्ष चलती है फिर बंद हो जाती है लेकिन आपकी पत्रिका अपवाद है । ५० वर्षों तक निरन्तर सुचारू रूप से चलाना साधारण बात नहीं है ।

इसके लिए गुरु का आशीर्वाद, संपादक का परिश्रम, समाज का सहयोग सर्वोपरि है । यह जैन जागृति पत्रिका पूरे विश्व के अंधकार को मिटाने का काम करती है, समाज में धर्म की जागृति का प्रकाश फैलाती है, जैसे इस पत्रिका का नाम है ऐसे ही इसका काम है, सभी के मन में, जीवन में जागृति कराती है। आपकी इस मासिक पत्रिका कि निरन्तर प्रगती हो यही शुभकामना ।

साध्वी श्री जागृतीची म.सा.

आदिनाथ श्री संघ पुणे चातुर्मास

**चैतन्य स्फूर्तीची जागृति करणारं  
“जैन जागृति”**

“विकसनशील मनाची उमेदवारी कधी संपत नसते. उमेदवारीची वृत्ती संपली की प्रवास थांबलाच. प्रवास सतत सुरू ठेवणं, नवतेच्या ध्यासाने शिखरामागून नवी शिखरं धुंडाळणं.... वाटेत ठेचाळणं, कधी गडगडणं, पुन्हा जखमांचे पंख करून भरारी घेणं यातच आयुष्याची गंमत आहे. सामान्य माणसं एखाद्या विख्यात व्यक्तिमत्वाला ‘हा यशस्वी’ असं समजतात, पण खुद्द तो माणूस मात्र स्वतःला ‘मी यशस्वी’ असं म्हणत नाही. कारण शिखरावर गेलेल्या माणसाला खुणावत असत नवं शिखर !” असंच एक शिखर म्हणजे “जैन जागृति” अंक. आज यशाची शिखरं पार करत करत. “जैन जागृति” सुवर्णमहोत्सव

साजरं करत आहे. स्व. कांतीलालजी चोरडिया यांनी १९६९ साली अबोल -शांत पण अविचल निरांजनीचे रोप रूजवावे तसे त्यांनी “जैन जागृति” अंकाचे रोप रूजवले. आज ते रोप ५० व्या वर्षात पदार्पण करत आपला विस्तार मोठ्या जोमाने प्रकाशमान करत आहे. त्या रोपाची निगा तेवढ्याच समर्थपणे व नवतेच्या ध्यासाने सुरू ठेवणारे “जैन जागृति” अंकाचे संपादक मा. श्री. संजयजी चोरडिया व सौ. सुनंदाजी चोरडिया व “जैन जागृति” परिवार म्हणजेच आपण सर्वजण, आपले खूप खूप अभिनंदन.

प्रत्येकाच्या मनाचा विकास दिवस साजरा करणारं “जैन जागृति” आज स्वतःचा सुवर्णमहोत्सव साजरा करतयं. उद्याच्या युवकांसाठी संस्काराची मुळाक्षर रूजवणारं, जैनत्व जपणारं, कडू आणि गोड, वाळवंट आणि हिरवळ, ऊन आणि पाऊस यांची सुरेख गुंफण करणारं, वर्तमानच्या अनेक प्रश्नांना जिवंत करणारं. प्राचीन साहित्य, कला, संस्कृती यांची जपणूक करून ते वाचकांसमोर प्रदान करणारं. समाजातील प्रत्येकाच्या स्वस्थ व नैतिक विचारांचं भरणपोषण करणारं सशक्त माध्यम म्हणजेच “जैन जागृति” होय.

जडणघडणीच्या वळणावर कल्पवृक्षाचं बेट लागावं तसं “जैन जागृति” च माझ्या आयुष्यातलं नवे तर अनेकांच्या आयुष्यातलं हे लेखनाचं व्यासपीठ आहे. प्रतिभेचं दर्शन केवळ कलाकृतीतून होत नाही. जगण्यातील अगदी सामान्य क्षणांतून प्रतिभेचं इंद्रधनू अवचित प्रकटतं, तेव्हा कागदावर त्यांना लिहीत करण्याचं व त्यांच्या प्रतिभेला जागृत करून जिवंत ठेवण्याचं कार्य “जैन जागृति” ने केलं आहे.

“जैन जागृति” ने अनेकांना लिहीतं, बोलतं केलं. आनंदाच्या बातमीत ते मित्र म्हणून अभिनंदन करतं, तर दुःखाच्या काळात वयानं मोठं होऊन सांत्वन करतं. संत नुसते वाचू नका, तर त्याची ओवी

अनुभवण्याचा ध्यास घेऊन संताचे आपणच वसंत होऊयात असं शिकवणारं. समाजाच्या प्रगतीसाठी जशी वृद्धांच्या अनुभवाची गरज असते, तशीच तरूणांच्या जोमदार नवविचारांचीही असते. वृद्धाचे स्थितीप्रिय विचार समाजाला स्थैर्य प्राप्त करणारं तर तरूणांचे नवविचार सामाजाला गती प्राप्त करून देतात ते “जैन जागृति” च्या माध्यमातून.

आजच्या संवाद हरवत चाललेल्या नेटवर्कींगच्या वर्तमानयुगात “जैन जागृति” अंकात खळखळणाऱ्या नदीची उत्स्फूर्तता आहे. प्रत्येक लिखाणाला ताजेपणा आहे. आपल्या रोजच्या जीवनातील तोचतोचपणा बाजूला करून प्रसन्नतेचा शिडकावा करणारे अनुभव, साधू साध्वीर्जींचे संस्कारमय लेख व व्याख्याने, जैन कथा, खुसखुशीत, मिशिकल विनोद, विविध प्रकारची माहिती तसेच नव्या वळणावरचे असूनही जुन्याशी सांगड घालणारे आणि समाज प्रतिबिंब उमटविणारे ललितलेख असे व अशा अनेक प्रकारचे साहित्य आपले जीवन समृद्ध करते.

असा हा श्रावणसरीसारखा सुखद अनुभव देणारा, नात्यानात्यांतील वीण घट्ट करणारा, शब्दांनाही बोलके करणारा, प्रत्येक माणसाला समृद्ध करणारा, सकारात्मकतेची साद घालणारा, विशेष म्हणजे वाचनाची गोडी लावणारा - वाढवणारा, हा “जैन जागृति” प्रवाह अखंडपणे अविरत फुलत राहावा बहरत रहावा आणि आपल्या संग्रही नेहमीच असावा असा हा अंक. “जैन जागृति” अंकाला सुवर्णमहोत्सवी वर्षाच्या व नवीन वर्षाच्या खूप खूप शुभेच्छा

प्रेषक : सौ. शुभांगी मनोजकुमार कात्रेला  
निगडी, प्राधिकरण, पुणे. मो. ९८५००६४९१५

**समाजाची आवड, समाजाची निवड**

**जैन जागृति**

# मृषावाद

लेखक : आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरिजी म.सा.

अमावस्या के पन्द्रह दिन बाद पूर्णिमा आती है, रात के आठ-दस या बारह घण्टे बाद दिन होता है, जन्म के दो-पाँच-पच्चीस पचास या सौ वर्षों के बाद मृत्यु आती है, परन्तु, एक बार वचनलब्धि हाथ से छूट गई तो अनन्त काल के बाद पुनः प्राप्त होती है।

कारण ? एकेन्द्रिय में वचनलब्धि नहीं होती और एकेन्द्रिय की उत्कृष्ट कायस्थिति असंख्य पुद्गल परावर्त है। एक-एक पुद्गल परावर्त में असंख्य अवसर्पिणी-उत्सर्पिणी गुजर जाती हैं।

प्रश्न यह है कि वचनलब्धि की यह दुर्लभता हमें ज्ञात है भला ? जो चीज अनन्तकाल के बाद मिलती हो और अल्पकाल के लिए प्राप्त होती हो उस चीज के सदुपयोग में हम यदि लापरवाह बने रहते हैं वह भी हमारे लिए हानिकारक सिद्ध होता है तो सोचिए उसका दुरुपयोग तो हमारे लिए कितना हानिकारक सिद्ध होगा ? वचनलब्धि का दुरुपयोग पाँच प्रकारों से हो सकता है।

१. असत्य वचनप्रयोग :- इस संदर्भ में आगे कुछ सोचने से पूर्व पूज्यपाद उपाध्याय श्री यशोविजयजी महाराज मृषावाद के विषय में क्या कहते हैं यह जान लें -

‘बीजुं पापनुं स्थान, मृषावाद दुर्ध्यान,

बाज ही छंडो रे, भवि मांडो धर्मशुं प्रीतडीजी।’

असत्य वचनप्रयोग एक प्रकार का दुर्ध्यान है। असत्य बोलने वाला स्वयं का असत्य पकड़ा न जाए यह सोचकर भयभीत रहता है और यह भयभीतता मन को प्रतिपल दुर्ध्यानग्रस्त बनाती है।

एक बात पर आपने कभी ध्यान दिया है ?

सत्य बोलने वाले की स्मृति कमजोर होती है

फिर भी उसे कोई बाधा नहीं आती, जबकि असत्य बोलने वाले को तो अपनी स्मृति तेज-तीव्र रखनी ही पड़ती है, क्योंकि उसकी कमजोर स्मृति उसके असत्य के लिए घातक बन सकती है।

प्रश्न यह उठता है कि असत्य मन को दुर्भावनाग्रस्त रखता है, फिर भी लोग असत्य बोलने के लिए इतने आतुर क्यों होते हैं ? इस प्रश्न का उत्तर यह है कि मनुष्य चार कारणों से असत्य बोलने हेतु तैयार हो जाता है।

१. क्रोधग्रस्त होता है तब

२. लोभ उसके मन में प्रवेश कर लेता है तब

३. भयभीत होता है तब

४. उपहास करने का विचार करता है तब

क्रोधावस्था में सत्यवचन पर अड़े रहना लगभग असंभव हो जाता है। लोभ को सफल बनाने के लिए असत्य की शरण में जाना ही पड़ता है। भयभीत अवस्था शब्दों के चयन में गलती करवाती ही है और उपहास की आदत हो उसके लिए सत्य बोलते रहना संभव ही नहीं है।

असत्य की एक भयंकरता ज्ञात है ?

मनुष्य हिंसा में अनेक जीवों को बख्श देता है, परन्तु असत्य में तो किसी को नहीं बख्शता।

उपकारी गुरुदेव श्री अथवा माता-पिता की, निरपराध अन्य जीवों की हिंसा में मनुष्य कभी प्रवृत्त नहीं होता, परन्तु आवश्यकता पड़ने पर उपकारियों के समक्ष और निरपराधों के समक्ष भी असत्य तो बोलना ही रहता है।

कल्पना कीजिए। मन उपकारियों के समक्ष भी जिस पाप का आचरण करने के लिए जिह्वा को तैयार



कर देता होगा, उस पाप के प्रति मन का कितना आकर्षण होगा ?

परन्तु, ठहरो ! एक अपेक्षा से असत्य का पाप हिंसा से भी अधिक भयंकर है । कारण, हिंसा करने पर मन में थोड़ी-बहुत भी उद्विग्नता होती है, उसका प्रायश्चित्त करने की इच्छा जाग्रत होती है, परन्तु असत्य का पाप ऐसा है कि जिसे करने के बाद न मन उद्विग्न होता है और न ही उसका प्रायश्चित्त लेने की इच्छा होती है ।

सावधान !

२. अहितकर वचनप्रयोग :- असत्य का उच्चारण न करना, मात्र यही प्रभु की आज्ञा नहीं है, अपितु स्व के लिए अथवा अन्य के लिए अहितकारी सिद्ध होता हो ऐसे सत्य का उच्चारण न करना यह भी प्रभु की आज्ञा है ।

बहुत बड़ी चुनौती है हमारे लिए ! सत्य के नाम पर मन कभी-कभी किसी व्यक्ति को बदनाम करने के लिए अनेक लोगों के बीच में उस व्यक्ति के जीवन के कुछ अप्रशस्त सत्यों को उजागर कर देता है, जिसके कारण उस व्यक्ति का भी अहित होता है और स्वयं की आत्मा का भी अहित होता है ।

याद रखना !

दूध पौष्टिक है यह बात सच है, परन्तु जिसे दस्त लग गए हैं उसके समक्ष दूध की पौष्टिकता की प्रशंसा करके उसे दूध पीने के लिए ललचाना यह भी एक प्रकार का अपराध ही है ।

जो वासनालोलुप है उसके समक्ष सुंदरता की प्रशंसा करने वाला सच बोलने पर भी उसका अहित ही करता है ।

लोभी के समक्ष धन की प्रशंसा करने वाला सत्यवादी होने के बावजूद उसका अहित ही करता है। अभिमानी के समक्ष सत्ता की शक्ति का वर्णन करनेवाला सत्य बोलने पर भी उसका अहित ही करता

है ।

अत्यन्त दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि विज्ञापनों के इस दौर में कदाचित् सत्य प्रकाशित होता हो तो भी वह सत्य अहितकारी होने के कारण त्याज्य ही है ।

३. अप्रिय वचनप्रयोग :- सच्चा इंसान गरीब है यह बात सच है । आप उसे सोने का सिक्का देना चाहते हो यह बात भी उतनी ही सच है, परन्तु वह सोने का सिक्का यदि आप गरम करके ही देना चाहते हो तो वह इंसान उस सिक्के को स्वीकार करेगा भला ? हर्गिज नहीं ।

बात सत्य है । हितकारी भी है । परन्तु आप उस बात को जिन शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हो वे शब्द यदि उसे आहत करें ऐसे हैं तो आपकी हितकारी बात भी उसके लिए स्वीकार्य नहीं बनती । सुनी हैं ये पंक्तियाँ ?

‘धन्य जीभ तो तेने रे कहीए,

वाणी विमल उच्चारती रे,

पाप-ताप-संताप शमावे,

तन-मन शीतल करती रे,

संदेश स्पष्ट है । किसी को इत्र देते समय मुख पर यदि स्मित होना चाहिए तो किसी को हितकारी बातें कहते समय शब्द उसे प्रिय लगें ऐसे मधुर होने चाहिए।

एक वास्तविकता ज्ञात है ?

इस जगत में दूसरों को सुनाने वाले लोग बहुत सारे हैं, सत्य सुनाने वाले लोग उससे अल्प हैं, हितकारी सत्य सुनाने वाले लोग उससे भी अल्प हैं, परन्तु, जो सत्य हो, हितकारी हो और प्रिय हो ऐसे वचन सुनाने वाले लोग तो अत्यन्त अल्प हैं ।

अलबत्ता, हमारी ओर से हमें दो बातों में स्पष्ट हो जाना है । दूसरों को सुनाने का अवसर हो तब हमें सत्य-हितकारी और प्रिय वचन ही सुनाने हैं, परन्तु दूसरों की सुनने का अवसर हो तब सत्य और हितकारी वचनों का आग्रह अवश्य रखना है, परन्तु वे वचन प्रिय



ही होने चाहिए ऐसा आग्रह कदापि नहीं रखना है।

कदाचित् अप्रिय हों तब भी उन वचनों को सुन लेना है। अंततः शस्त्रक्रिया पीड़ाकारी होने पर भी रोगी वैद्य को उसके लिए सहमति दे ही देता है न ?

४. अधिक वचनप्रयोग :- दूध में शक्कर भी यदि आवश्यकता से अधिक डाली जाती है तो जिस प्रकार दूध बेस्वाद बन जाता है, उसी प्रकार सत्य, हितकारी और प्रिय शब्द भी यदि अत्यधिक मात्रा में बोले जाते हैं तब वे शब्द अपनी शक्ति खो देते हैं।

एक अन्य बात ! मृषावाद से जो बचना चाहता है उसे अधिक शब्द प्रयोग से किसी भी हालत में बचना ही होगा। क्योंकि, अधिक की असत्य के साथ गहरी मित्रता है।

याद रखना ! आवश्यकता से अल्प शब्द प्रयोग जितना हानिकारक सिद्ध होता है उसकी तुलना में अधिक शब्द प्रयोग कई गुना अधिक हानिकारक सिद्ध होता है। और बात भी सत्य ही है ना ? कम शक्कर दूध की स्वादिष्टता का इच्छित अनुभव नहीं होने देती, परन्तु अधिक शक्कर तो दूध को स्वादहीन ही बना देती है।

अल्प भोजन कदाचित् अशक्ति का कारण बनता है, परन्तु अधिक भोजन अजीर्ण का कारण अवश्य बनता है।

संदेश स्पष्ट है। बोलने का अवसर हो तब मौन नहीं रहना है, परन्तु अधिक बोलने से तो बचते ही रहना है।

५. असामयिक वचनप्रयोग :- उत्तर दीजिए। 'राम' शब्द का प्रयोग कितना अच्छा है, परन्तु किसी के विवाह प्रसंग पर आप यदि 'राम बोलो भाई राम' बोलेंगे तो होगा क्या ? शब्द भले ही सत्य हैं, हितकारी हैं, कर्णप्रिय हैं और आवश्यकतानुसार ही हैं, परन्तु यदि आप अनुचित समय पर उनका उच्चारण कर बैठे हों तो वे शब्द आप सोच भी नहीं सकते ऐसा हाहाकार

मचा देते हैं।

उत्तर दीजिए ! सुबह नाश्ते में खाने योग्य खाखरे यदि कोई आपको दोपहर के भोजन में दें तो ? सर्दी के मौसम में पहनने के कपड़े यदि कोई आपको गर्मी के मौसम में पहनने के लिए दे दे तो ?

वर्षा हो जाने के पश्चात् किसान धरती में बीजारोपण करे तो ? रेल के प्लेटफॉर्म को छोड़ने के बाद ही कोई यात्री रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो ?

गेंद के आने से पहले ही बल्लेबाज अपना बल्ला उठा ले तो ? मृत्यु होने से पूर्व ही स्वजन बीमार की अर्थी तैयार कर दे तो ? विजेता होने की घोषणा से पहले ही कोई उम्मीदवार अपनी विजययात्रा निकाल ले तो ? संदेश स्पष्ट है।

सत्य बोलिए। हितकारी और कर्णप्रिय बोलिए। परिमित शब्द बोलिए। परन्तु, न समय से पहले बोलिए, न ही समय बीत जाने के बाद बोलिए। उचित समय पर ही बोलिए।

एक वास्तविकता के प्रति ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा। पानी में डूब जाने का जिसका स्वभाव है वह लोहे की कील भी यदि लकड़ी से जुड़ जाती है तो लकड़ी के साथ वह लोहे की कील भी तिर जाती है।

संक्षेप में, लोहे की कील सुलभ है। लकड़ी भी सुलभ है, परन्तु लोहे की कील को लकड़ी से जोड़ देने का विचार दुर्लभ है।

बस, उसी प्रकार जीवन में, समाज में, परिवार में हाहाकार मचाने की पाशवी क्षमता धारण करने वाले शब्द तो दुर्जन व दुष्ट के लिए भी सुलभ हैं तो हत्यारे और व्याभिचारी के लिए भी सुलभ हैं। दूसरी ओर,

प्रभु और संतो के, गुणी और सज्जनों के दर्शन भी सुलभ हैं। परन्तु, उन शब्दों को प्रभु-संत-सज्जन और गुणी की स्तवना में और स्तुति में जोड़ देने का विचार दुर्लभ है। उन शब्दों को सत्यवचन में, प्रियवचन में हितकारी वचन में और परिमितवचन में

जोड़ देने का विचार दुर्लभ है ।

हम यदि ऐसे विचार के स्वामी बन गए तो अनन्तकाल के पश्चात् हमें प्राप्त वचनलब्धि अवश्य सार्थक हो जाएगी ।

तब भी तुम्हारी बात मैं सुनूँगा

सुकरात (सोक्रेटीस) के पास एक युवक आया।

‘मुझे मेरे मित्र के विषय में आपसे कुछ बात करनी है ।’

‘तुम्हारी बात सुनने से पहले तुम्हें मेरे तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे । मुझे तुम्हारी बातों से संतुष्टि होगी तो ही मैं तुम्हारी बात सुनूँगा ।’

‘पूछिए’ ‘तुम्हारे मित्र की जो बात तुम मुझसे करने आए हो वह बात सच्ची है ?’

‘हाँ’ वह बात अच्छी है भला ?’

‘नहीं, उसकी गलती बताना चाहता हूँ ।’

‘वह बात मेरे लिए उपयोगी है भला ?’

‘नहीं’ ‘जो बात सच्ची है, पर अच्छी नहीं है और मेरे लिए उपयोगी नहीं है वह बात मैं तुमसे सुनना नहीं चाहता’ सुकरात ने सुना दिया ।

इस संदर्भ में अंतिम बात !

सर्वत्र सत्य न भी बोल पाएँ तो असत्य तो कदापि न बोलना ।

इस व्रत को याद रखकर कम-से कम इतना निर्णय तो अवश्य कर लीजिए । जो मेरे अत्यन्त निकट और अत्यन्त उपकारी हैं उन माता-पिता के समक्ष और गुरुदेव के समक्ष तो कम-से-कम असत्य नहीं ही बोलेंगे । ●

### जैन जागृति - जाहिरात व बातम्या २० तारखे पर्यंत पाठवा

जैन जागृति मासिक दर महा ५ तारखेला पुणे येथून प्रकाशित होत आहे. दर महा २५ तारखेला अंक छापण्या साठी जातो. तरी आमच्या सर्व ग्राहकांनी व जाहिरात-दारांनी २० तारखेपर्यंत बातम्या, जाहिराती आमच्या ऑफीसमध्ये पाठवाव्या. त्यानंतर आलेल्या बातम्या पुढील अंकात प्रसिध्द होतील. - संपादक

## आईचा पगार किती ?

प्रेषक : अमृत साधना, पुणे

मागील आठवड्यात हरियाणातील १७ वर्षीय सुंदर व बुद्धिमान युवती मानुषी छिल्लरने केवळ मिस वर्ल्डचा किताब जिंकला नाही तर, आपल्या उत्तराने जगात एक नवीन चर्चेस सुरवात केली. निवड समितीने मानुषीला विचारले, ‘जगात सर्वाधिक पगार कोणत्या क्षेत्रात मिळायला हवा ?’ मानुषी म्हणाली ‘आईला. एक आई जे काही आपल्या मुलीसाठी व आपल्या पूर्ण घरासाठी करते त्याचे मोल काहीच नाही. पगार केवळ पैश्यांच्या माध्यमातून मिळत नाही तर प्रेम व आदरातूनही मिळतो. आईच माझी प्रेरणा राहिली आहे. माझी सर्वात चांगली मैत्रीण आहे. मला वाटते प्रत्येक आईला सर्वाधिक पगार मिळायला हवा.’

खरंच, आईच्या कामाला कोणतेच मोल नाही. फोर्ब्सद्वारा संचालित केली जाणारी बेवसाईट सॅलरी. कॉम वर डेटा एकत्र केला जात आहे. आई जितके काम करते, तितक्या कामांसाठी नोकर ठेवले तर किती पगार द्यावा लागेल. या गोष्टींचा हिशोब करून एका अमेरिकन संस्थेने आईचा वार्षिक पगार एक लाख पंधरा हजार डॉलर्स निश्चित केला. आईला पैसे देणे चुकीचे वाटते. परंतु आज ही परिस्थिती निर्माण झाली आहे. पैसे देऊन आईकडून मिळणारा मानसिक, भावनात्मक, आत्मिक पोषणाची भरपाई करता येणार नाही. परंतु परिस्थिती अशी आहे की, मुलांचे प्रेम आईला तेव्हाच मिळते, जेव्हा त्यांचे जीवन खऱ्या अर्थाने सुरू होत नाही. मुले मोठी झाल्यावर आई एकटी पडते. तिला लहान, लहान गोष्टींसाठी आपल्यावर अवलंबून रहावे लागते. आईचा सन्मान तेव्हा होईल, जेव्हा युवा अवस्थेत तिच्या कामाचे मूल्य बँकेत ठेवले जाईल. वृद्धावस्थेत आई घरात कोणाला ओझे वाटणार नाही, याचे प्रशिक्षण मुलांना लहानपणापासून दिले गेले पाहिजे. ●

## कच्छर तपशील - जानेवारी २०१९

### ❖ वीतराग सेवा संघ - पुणे

सन १९८१ मध्ये स्थापन झालेले वीतराग सेवा संघ हे गेली ३८ वर्षे अखंडपणे विविध समाजसेवे मध्ये कार्यरत आहे. त्यांच्या या कार्याची पावती म्हणून या संघाला आनंद दरबार दत्तनगर अध्यक्ष बाळासाहेब धोका यांच्या तर्फे दि. ९-१२-२०१८ रोजी 'पुणे भूषण' या पुरस्काराने सन्मानित करण्यात आले. यावेळी वीतराग सेवा संघा तर्फे अध्यक्ष श्री. सुनिल मुथा यांनी त्याचा स्विकार केला. वीतराग सेवा संघाचे श्री. संजय ओस्तवाल, अनिल गेलडा, कांतीलाल भंडारी, चैनसुख बोगावत, संतोष बोरा, प्रवीण गुंदेचा, नेमीचंद भंडारी, सुभाष भंडारी, शांतीलाल ओस्तवाल, मांगीलाल मांडोत, प्रवीण चोरडिया आदी कार्यकर्ते उपस्थित होते.

### ❖ साध्वी जागृति प्रेमवत्सल्य गो सेवाधाम - भावडीगाव

प.पु. श्री जागृतिजी म.सा. व वत्सलाश्रीजी म.सा. यांच्या सान्निध्यात साध्वी जागृति प्रेमवत्सल्य गो सेवा धामचे भूमीपूजन ९ डिसेंबर रोजी संपन्न झाले. यावेळी भव्य वरघोड्याचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी जुलूसात साध्वीगण व जमीन दान देणारे बंब परिवार.

### ❖ जैन कॉन्फ्रेंस राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी

श्री ऑल इंडिया जैन कॉन्फरन्सच्या निवडणूकीत श्री. पारसजी मोदी यांची राष्ट्रीय अध्यक्षपदी बिनविरोध निवड झाली. नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री. पारसजी मोदी यांचा शपथ विधी समारोह दि. १५ जानेवारी २०१९ रोजी भव्य कार्यक्रमात अहमदनगर येथे संपन्न होत आहे.

### ❖ आनंद अचल गुरु फाऊंडेशन - पुणे

आनंद अचल गुरु फाऊंडेशन व संचेती हॉस्पिटल

यांच्या तर्फे अपंग मुलांसाठी निःशुल्क तपासणी व ऑपरेशन शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी सुमारे १४५ पेशंटची निःशुल्क तपासणी करण्यात आली व त्यात सुमारे ६३ पेशंटचे ऑपरेशन करण्याचे ठरविण्यात आले. यावेळी पेशंटची तपासणी करताना डॉक्टर व सोबत मुनीश्री अचलऋषिजी व सौ. उज्वला विलासजी पालरेशा.

### ❖ डायग्नोस्टिक सेंटर, हडपसर, पुणे

हडपसर, पुणे येथील डायग्नोपिन, डायग्नोस्टिक व डेंटल मल्टीस्पेशलिस्ट सेंटर पुणे चे उद्घाटन युवराज संभाजीराजे छत्रपती यांच्या हस्ते करण्यात आले. सोबत वडगाव शेरी येथील सामाजिक कार्यकर्ते श्री. प्रफुल्लजी कोठारी, शांतीलालजी कोठारी मितेश कोठारी व कोठारी परिवार.

### ❖ डॉ. सुधा कांकरिया - अहमदनगर

अहमदनगर येथील सामाजिक कार्यकर्त्या व सुप्रसिद्ध नेत्रतज्ञ डॉ. सुधा कांकरिया यांना महाराष्ट्र इंडियन मेडिकल असोसिएशनचा अत्यंत प्रतिष्ठीत समजला जाणारा नाडकर्णी अवॉर्ड मुंबई येथे झालेल्या MASTACOn2018 या राज्यस्तरीय कॉन्फरन्समध्ये सन्मानपूर्वक प्रदान करण्यात आला.

### ❖ विजय वल्लभ स्कूल - पुणे

आचार्य श्री विजय वल्लभ प्रशाले मध्ये अद्ययावत् तंत्राने समृद्ध असलेल्या एका आगळ्यावेगळ्या भाषा प्रयोगशाळेचे उद्घाटन श्री. प्रकाशजी धोका (अध्यक्ष, डेक्कन चेंबर्स ऑफ कॉमर्स) यांच्या शुभहस्ते झाले.

चंद्रप्रकाश लॅंग्वेज लॅब उभारणीचे प्रमुख सहयोगी श्री. प्रकाशजी धोका यांचा सन्मान संस्थेचे चेअरमन श्री. सुभाषजी परमार, श्री. पुखराजजी संघवी, श्री. सुभाष ओसवाल, श्री. सुरेश परमार श्री. विजयराजजी रांका व संस्थेचे ट्रस्टी यांच्या हस्ते करण्यात आला.

- ❖ **रमेश फिरोदिया कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर**  
श्री. रमेश फिरोदिया कॉलेज ऑफ आर्किटेक्चर अहमदनगरच्या वतीने डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर टेक्नॉलॉजी युनिव्हर्सिटी, महाराष्ट्रचे व्हा. चान्सलर प्रो. डॉ. व्ही. जी. गायकर यांचा सत्कार सोहळा आयोजित केला होता. यावेळी मॅनेजिंग ट्रस्टी सी ए रमेश फिरोदिया यांच्या हस्ते त्यांचा सत्कार करण्यात आला.
- ❖ **डॉ. संजय चोरडिया – सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे**  
पुणे – शिक्षण व सामाजिक क्षेत्रातील उल्लेखनिय कार्याबद्दल सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष डॉ. संजय चोरडिया यांना नुकताच 'पद्म संघर्ष विशेष गौरव' पुरस्कार ऑल इंडिया अँटी टेररिस्ट फ्रंटचे चेअरमन मनिंदरजीत सिंग बिट्टा यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला.
- ❖ **जैन समाज गौरव श्री. विजयराजजी रांका**  
जैन समाज गौरव व गुलाबचंद चतरिंगजी ज्वेलर्सचे संचालक श्री. विजयराजजी रांका यांची विशेष मुलाखात या अंकात पान ५१ वर प्रसिध्द केली आहे.
- ❖ **सौ. सुलभा भंडारी, पुणे – हाफ मॅरिथॉन विजेती**  
पुणे येथील सौ. सुलभा संदेश भंडारी यांना नुकतीच झालेली पुणे हाफ मॅरिथॉन मध्ये दूसऱ्या क्रमांकाचे पारितोषिक मिळाले आहे. त्यांच्या कार्यक्षेत्राची माहिती देणारा लेख या अंकात पान ९६ वर प्रसिध्द केला आहे.
- ❖ **मानव मिलन महिला विभाग – पुणे**  
मानव मिलन महिला विभाग, पुणे तर्फे दरवर्षी विविध सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रमाचे आयोजन करण्यात येते. तन-मन-धनाने गरिब लोकांची सेवा करणाऱ्यांचा समाजातील व्यक्ति चा सत्कार करण्यात येतो. रांका ज्वेलर्सचे श्री. ओमप्रकाशजी रांका यांचा सत्कार करताना मानव मिलनच्या अध्यक्षा निर्मला कांतीलालजी खिंवसरा व लता कांकरिया इत्यादी.

## SHRUT FOUNDATION, PUNE SAMYAKATVA - WORKSHOP

SHRUT FOUNDATION  
Presents  
for the first time in Pune  
A Great Opportunity to  
attend a 3 Day Workshop

### 'Samyaktva' (Philosophical & Practical Journey)

to be led by  
Shri Jitendrabhai B. Shah  
(L. D. Indology Institute, Ahmedabad)  
and  
Shri Vallabhabhai Bhansali  
(Enam Financial Consultants, Mumbai)

**on 8th to 10th Feb., 2019  
At Ahinsa Bhawan,  
Opp. Nehru Stadium, Pune.**

Fees : Rs. 1000/- Inclusive of stationery,  
lunch and tea for all three days.  
(Restricted to 200 persons  
on first come basis)

Contact : Lalit Gundecha - 9422306061  
Rajendra Bathiya - 9822037616

**अच्छी बातें**  
अच्छी बातें पढ़ने की  
आदत हो तो,  
अच्छी बातें करने की  
आदत अपने आप बन जाती है।

तीर्थकर प्रभु महावीरांचे अंतिम वचन, श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्रावर आधारित

# ॥ जिनेश्वरी ॥

प्रवचनकार : उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा.

भावानुवाद : साध्वी श्री ओजसदर्शनाजी म.सा., सौ. योगिता चंगेडे (क्रमशः)

## अध्याय ३२ – प्रमाद स्थान

‘भूताला जागे करणे सोपे पण सांभाळणे कठिण  
भगवंताला जागे करणे अवघड पण तो एकदा  
जागृत झाला की जगणे फार सोपे’

या अध्यायाच्या विश्लेषणात जे सिद्धांत सांगितले आहे ते आजच्या वैज्ञानिक लोकां जवळ सुद्धा नाहीत. एकाच प्रश्नाचा मागोवा घ्या. आपला नेहमीचा अनुभव काय आहे ? इन्द्रिय पदार्थांमागे धावतात- जातात. इंद्रिय पदार्थांला ग्रहण करतात. शब्दांना कान पकडतात. रूपाला डोळे ग्रहण करतात. आपण असंच म्हणू की डोळे रूप ग्रहण करतात.

परंतु अध्यात्म विज्ञानात भगवंतांनी सांगितलेले डोळे रूप ग्रहण करतात व रूपसुद्धा डोळ्यांना ग्रहण करतात. शब्दांना कान ग्रहण करतात व कानाला शब्द ग्रहण करतात. एखाद्या वस्तुची तल्लफ लागते की त्यावेळी कोण कोणाला बोलावते ? दारू दारूड्याला बोलविते. प्रथम दारू दारूड्या पितो बाकीचे प्याले दारूड्याला पितात. ‘ एकच प्याला’ नाटकात आहे ना ? ? तसच खरोखर आपल्या जीवनात असतं.

जीवनातील सगळ्या घटकांना दोन बाजू आहेत. प्रथम आपण ऐकतो नंतर शब्द आपल्याला पकडतात घर आपल्याला पकडतं की आपण घराला पकडतो ? आपण घराला पकडतो म्हणूनच ज्याला ज्या जागेवर झोपण्याची सवय असते ती जागा बदलली की त्याला झोप येत नाही म्हणजे त्या जागेने त्याला पकडून ठेवलं आहे. अशाच महत्वपूर्ण गोष्टी या अध्यायात आहेत.

जन्मजन्मांतरा पासून आपलं नातं प्रमादा बरोबरच आहे. प्रमादस्तान सुटले की आपण ही सुटलोच समजावे.

### प्रमादाची स्थाने

अच्चंतकालस्स समूलगस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो ।

तं भासओ में पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगंतहियं हियत्थं ॥

सगळ्या दुःखातून मुक्त होण्याचा उपाय भगवंत सांगत आहेत. ते परिपूर्ण चित्ताने ऐकावे. एकांत हित पण आणि एकांत हिताचे प्रयोजन पण भगवंतांनी प्रसारीत केले आहे. अशा मुलभूत गोष्टींचे प्रतिपादन त्यांनी केले आहे. शब्द आहे ‘प्रमादस्थान’. प्रमादाचे वर्णन नाही प्रमादस्थानांची चर्चा आहे. रेल्वेस्टेशनची चर्चा आहे रेल्वेची नाही. रेल्वेस्टेशनावर गेलोच नाही तर रेल्वेत बसू शकता का ? एअरपोर्टवर गेलोच नाही तर विमानात बसू शकू का ? प्रमादाची स्थानं म्हणजे रेल्वेस्टेशन, एअरपोर्ट. पापाच्या ठिकाणीच जाऊ नका म्हणजे पाप करण्यापासून दूर रहाल अशी ही प्रमादस्थानांची व्याख्या आहे.

### दुःखामुळे मोहाची उत्पत्ती

कोटून मोहाची उत्पत्ती होते ? आजपर्यंत सारी प्रवचन, व्याख्यान, भाषणं याच गोष्टीची चर्चा होते मोह नका करू, राग-द्वेष करू नका परंतु परमात्मा इथे वेगळीच गोष्ट सांगतात, दुःखाचा शेवट करा मोह राहणारच नाही. मोहाला असे समाप्त करताच येणार नाही. रागद्वेष असे जाणारच नाही जो पर्यंत दुःख आहे

तोपर्यंत मोह आहे. दुःखमुक्त झालो की मोह निघून जाईल. उपाय दुःखनाशाचा की मोहनाशाचा ? आपले सर्व धर्मगुरू उपाय कशाचा सांगतात ? म्हणूनच आपण यशस्वी होत नाही. भगवंताच्या मूलभूत सिद्धांतालाच विसरले.

दुःखं हयं जस्स न होइ मोहो, मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा ।

तण्हा ह्या जस्स न होई लोहो, लोहो हओ जस्स न किं चणार्ई ।।

ज्याला दुःख नाही त्याला मोह होत नाही. ज्याला मोह होत नाही. त्याची तृष्णा जागत नाही ज्याची तृष्णा संपते त्याचा लोभ जागृत होऊ शकत नाही आणि मग तो लाचार होऊ शकत नाही. 'दुःख करू नका' मागची सेना आपोआप नेस्त नाबूत होईल. मग दुःखाचा नाश कसा करावा ?

### दुःखमुक्तीचे मार्ग

दुःखमुक्तीचा प्रथम मार्ग म्हणजे गुरू व वृद्ध लोकांची सेवा-शुश्रूषा करावी. लहानांना तरी खुश करणे अवघड असते कारण त्यांच्या मागण्या-अपेक्षा भरपूर असतात. मोठ्या माणसांना वयस्कर लोकांना आनंदी ठेवणे फार सोपे आहे. त्यांच्या काही फार मागण्या किंवा काही अवाढव्य अपेक्षाही नसतात. फक्त पाच मिनीट बसलो किंवा नुसतं जेवयाला घरी आले तेव्हा विचारलं, "बाबा तुम्ही जेवलात का ? आई चहा घेतला का ?" तरी खुप झालं. "पाय चेपून देऊ का?" विचारलं तरी त्यांचे डोळे पाणावतात. त्यातून निघणारे आशीर्वादही जाणवतात आणि त्या आशीर्वादाला मात्र जगात कोणत्याही गोष्टीचं मोल नाही.

दुःखमुक्तीचा दुसरा मार्ग सांगितला की जे अज्ञानी लोक आहेत, मूर्खलोक आहेत त्यांच्यापासून दूर रहा. त्याऐवजी स्वाध्यायात स्वतःला निमग्न करा, गुंतवणूक कशात करायची हे ठरवा. स्वाध्यायात भगवंताच्या वाणीत वेळ लावायचा की संसाराच्या

पंचायतीत वेळ घालवायचा हे तुम्ही ठरवायचं. कारण संसारातील लोक तुमचं दुःख दूर करू शकत नाहीत. त्या ऐवजी भगवंत-वाणी ऐकण्यात, सत्संगात बसलो तर दुःख दूर होऊन शांतीचा मार्ग सुकर होईल. भगवंताची वाणी केवळ ऐकायची नाही धारण करायची. जे परमात्म्याच्या सूत्र आहे, ज्या सूचना आहेत, सिद्धान्त आहे त्याची धारणा करावयास हवी.

### निपुणबुद्धी सहाय्यक

जसे भगवंतांनी सांगितले 'सहायमिच्छे निरुणत्यबुद्धि' फार गहन अर्थ आहे सहायता कोणाची घ्यायची ? कुणाची नाही घ्यायची ? निपुणबुद्धि ज्याची असेल त्याच्याकडून सहायता घ्यायची. बुद्धि कुणाची? स्वतःची व तिचं सहाय्य कसं घ्यायचं ? जेव्हा प्रसन्नचित्त असेल तेव्हाच घ्यायचे

'आहारमिच्छे मियमेसणिज्जं परिमित, मर्यादित आहार आधार बनू शकतो. अतिमात्रेत केलेला आहार आजार आणि भारच बनतो. जसे एक काठी हाती घेतली तर ती चालण्यासाठी आधार बनते पण दहा काठ्या हातात घेतल्या तर त्या आधार नाही केवळ भार बनतात. असा आहार घ्या की जो जगायला आधार - सहाय्यक होईल पण तो आधार सुध्दा निरीक्षण शोधन करून घ्यावयास हवा आणि ते शोध करण्यासाठी निपुणबुद्धि आवश्यकता असते. जे आलं ते खाल्लं-शोधबंध केल्याशिवाय खाणे चूकीचे आहे आणि भगवंत सांगतात आपल्याला निपुण बुद्धिची सहायता घ्यायची असेल तर साधनेचे आलंबन घ्यावयास हवे, श्रद्धेचे आलंबन घ्यावे, भगवंताचे आलंबन घ्यावे, कारण की जेव्हा भगवंतशक्तीचं आलंबन घेऊ, तेव्हाच आपली चेतना चैतन्यशक्तिशी सहज जुळून जाईल, मिळून जाईल.

पुढे भगवंतांनी प्ररूपित केलं आहे. घर कसं असावे ?

घर असावं घरासारखे, नकोत नुसत्या भिंती

तिथे असावं प्रेम जिव्हाळा, नकोत नुसती नाती

अशी बरीच सुंदर कविता आहे आज घर म्हणजे मार्बल, ग्रेनाईट, A.C., T.V. युक्त इमारत पण भगवंत सांगतात “सुविधा बरोबर सुज्ञता हवी. संपत्ति बरोबर सन्मति हवी, विवेक ज्या घराचा प्राण असतो तेथे विरोधाला वाव नसतो. जगताना, बोलण्यात-खातांना-झोपतांना विवेक असावा म्हणजे सर्व काही व्यवस्थीत चालते. काही जमिनी अशा असतात की जेथे बाभळीचं रोपटं उगतं आणि पटकन वाढतं पण आंब्याचं झाड मात्र येत नाही आणि काही जमिनी अशी असतात जेथे आमराईच तयार होते, बाभळीचं बी पेरलं तरी ते उगवत नाही. घराची जमीन अशीच असावी जिथे काटे उगवूच शकणार नाहीत कायम आनंदी आनंद नांदावा. कटकटी असूच नये.

त्यात महत्वाचं सूत्र लक्षात घ्या नाती-संबंध अशा व्यक्तींशी जोडावे जे गुणवान असतात. आपल्यापेक्षा वरचढ, श्रेष्ठतर असतात ज्यांना बघून आपल्याला ही वर उठण्याची इच्छा होते, आपली अवनती होत नाही अशा लोकांशी नाते जोडावे-दुर्जनांशी नाते तोडावे. सज्जन मिळत नसेल तर एकटे रहावे पण दुर्जनांशी संगति करू नये.

चंडकौशिक सर्पाजवळ परमात्मा येऊन उभे राहिले. चंडकौशिक तीन जन्मापासून क्रोधच करत आला. क्रोधाचं त्या प्रचंड रागाचं कारण ठाऊक आहे? केवळ एकच कारण ‘शिष्याने दुःखी केलं’ व त्या दुःखाला त्यांनी पकडून ठेवलं. त्या दुःखाचं क्रोधाच प्रक्षालन नाही केले, पकड मजबूतच ठेवली. म्हणून दुःखीच राहिले. शिष्याने सुख ही दिले होते ते सुख पकडून नाही ठेवलं आणि दुःखाच्या समयी आठवलं ही नाही. परमात्मा त्याच्या जवळ आले व त्याला दुःखातून मुक्त केले. कसे काय दुख; मुक्त ? त्यांनी प्रबोधन नाही दिले केवळ २ शब्द उच्चारले “हे दुःख जे तू पकडून ठेवलं आहेस, ते तू सोडून दे” भगवंतांनी संन्यासानंतर प्रथम प्रयोग चंडकौशिक नागावर केला. ते त्याच्या जवळ उभे राहिले, करूणेची

नजर त्यावर पाखरली आणि मनातच संदेश पाठविला “माझ्या मनात जी करूणा आहे ती तुझ्या मनात जागू दे, माझ्या मनात जी शांति समाधी आहे ती तुझ्या मनालाहि पावू दे” आणि तो दुःख मुक्त झाला. मग चंडकौशिक-भद्रकौशिक झाला.

म्हणून परमात्मा सांगतात सर्व प्रथम समोरच्या व्यक्तित्वे दुःख दूर करण्याचा प्रयत्न करा. घराघरात भांडण, विरोध, एक दूस्च्यावर आक्षेप करणे, वादविवाद होतो त्याचं कारण काय ? जेव्हा मनुष्य कोणत्या तरी दुःखाने दुःखी असतो तेव्हाच तो असे वर्तन करतो. दुर्योधनाला कुणी का समजावू शकले नाही, कारण त्याचं दुःख कुणी दूर करू शकले नाही. त्याच्या मनात सतत एकच दुःख होतं ‘माझे वडिल आंधळे आहेत आणि आईच्या डोळ्यावर पट्टी बांधलेली आहे.’ त्याचं हे दुःख दूर झालं नाही त्याचीच प्रतिक्रिया, त्याच्याच तणावाने महाभारत घडविले. बंधूनो ! भगवंत सांगतात समजून-उमजून संकटाला-संधी बनवा, कलंकाला अलंकार बनवा परिस्थितीचा प्रसाद म्हणून स्विकार करा व परमसत्तेशी आपल्या चैतन्यसत्तेला जोडा.....

#### अतिरिक्त आहारातून विकारांचा जन्म

भगवंतानी अतिशय वैज्ञानिक गोष्ट या श्लोकात नमूद केलेली आहे. विज्ञान आणि अध्यात्म यांची सांगड भगवंतांनी अगदी सहज घातली आहे. त्यांनी सांगितले बाबा रे ! शरीरात अतिरिक्त, अतीमात्रेत उर्जा जमा होईल असा आहार करू नकोस. कारण उर्जा, शक्ती कधीही निष्क्रिय रहात नाही, ऊर्जा नेहमी सक्रिय असते. जर आपण अनावश्यक ऊर्जा निर्माण केली आणि त्या ऊर्जेचा सदुपयोग केला नाही तर ती ऊर्जा उपद्रव केल्याशिवाय राहणार नाही, म्हणून परमात्मा सांगतात.

बंधूनो ! तितकेच घ्यावे ताटात जेवढी आवश्यकता आहे. रसास्वादांमुळे शरीरात अतिरिक्त ऊर्जा निर्माण होते, विकसित होते आणि एकदा का ती



तयार झाली की मग वासनेचा, विकारांचा, दुर्भवांनाचा खेळ सुरू होतो आणि हा विचित्र खेळ सुरू झाल्यावर साधना-शांतता, सात्विकतेचा मेळ बसणं कठीण होऊन जातं. विकृतींचाच विकास होण्यास सुरुवात होते.

भगवंतांनी उदाहरण दिले आहे की ज्याप्रमाणे फळांचा बहार ज्या वृक्षावर आहे तो वृक्ष पक्ष्यांना त्या वृक्षावर बसण्यासाठी जणू आमंत्रित करतो आणि पक्षी तिथे आपले बस्तान मांडतात त्याचप्रमाणे आपल्या शरीरात तयार झालेली अतिरिक्त ऊर्जा, अनावश्यक चरबी विकाररूपी पक्ष्यांना आमंत्रित करते आणि मग ते विकाररूपी पक्षी शरीरात वास करण्यास सुरुवात करतात.

पुढे आपल्या साधकांना सावध आणि सुरक्षित करण्यासाठी भगवंत सांगतात की जिथे मांजर राहते, तिथे उंदरांनी निवास करणे, राहणे उंदरांसाठी घातक ठरते. त्याचप्रमाणे ब्रम्हचारी, विद्यार्थी, तपस्वी व साधकांनी जिथे आपली साधना भंग पावेल अशा जागेत, अशा वातावरणात राहणे घातक ठरते. थोडक्यात सांगणे एवढेच की ब्रम्हचारी पुरुषांनी स्त्रियांच्या सहवासात, आवाक्यात राहणे तितकेच धोक्याचे आहे जितके मांजरीच्या सहवासात उंदरांनी राहणे धोक्याचे आहे.

**दुःखाचा जन्म कोठून होतो ?**

या पुढील सूत्र आहे की दुःखाची जन्मभूमी कोणती ? या पूर्वी वर्णन केले आहे की दुःखामुळे मोहाचा जन्म होतो. इथे आपणास आता हे समजून घ्यायचे आहे की केवळ दुःखाचा नव्हे भावनात्मक दुःखाचा, व्याकुळ करून टाकणाऱ्या दुःखाचा जन्म कोठून होतो ? त्याचे रहस्य सांगतात भगवंत की 'कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुःखं' कामभोगांविषयी आसक्ती अर्थात गीधाडाची वृत्ती, त्यांची ती आसक्तीपूर्ण नजर अशी ज्यांची कामभोगांविषयी वृद्धी, गीधडदृष्टी असते त्यातूनच दुःखाचा जन्म होतो.

भोजनामुळे, खाण्यामुळे दुःखाची उत्पत्ती होत नाही पण अन्नाविषयी गीधडाची वृत्ती, गीधडाचं दृष्टीकोन ठेवल्यामुळे दुःखाचा जन्म होतो. तुम्ही अनेकवेळा बघितलं ही असेल की गिधाड आकाशात कितीही उंच झेप घेऊन उंचावर उडत असते पण त्याची दृष्टी कुठे असते जिवंत प्राण्यांवर की मुडद्यांवर ? कामभोगांविषयी गृध्र जो असतो त्याची नजरही अशीच असते. विचारांच्या बाबतीत ते खूप उंची गाठतात परंतु आचरणाच्यावेळी घाण जागीच वावरतात आणि संधी सापडली की हलक्यावृत्तीने, गीध्रदृष्टीने झडप घालतात आणि मग त्यातूनच दुःखाचा जन्म होतो आणि जर या अशा प्रकारच्या दुःखाचा अंत करायचा असेल तर सावध होऊन आपल्या अंतर्मनाचे अवलोकन करा की आपले मन कसे आहे, आपली दृष्टी गीधाडाची नाही ना ? असेल तर सर्वप्रथम ती गीध्रदृष्टी बदलावयास हवी तर आपल्या दुःखाचा अंत होईल.

**आकर्षणामागचे विज्ञान**

रूप बघतांना काय होते ? डोळे रूपाला ग्रहण करतात. मनाजोगे आवडणारे दृश्य बघितले तर डोळे प्रसन्न होतात, खुलून जातात आणि मनाला बोचणारे, टोचणारे दृश्य बघितले की डोळे सुद्धा उदास होतात, म्लान होतात. बघतांना वाटते की हे सर्व एकतर्फी चालत असावे परंतु भगवंतांनी अगदी सूक्ष्म विवेचन वर्णित केले आहे की सामान्य अनुभव असा की डोळे रूप ग्रहण करतात परंतु त्यापुढील अनुभव असा आहे की रूप सुद्धा डोळ्यांना ग्रहण करते. ते कशा प्रकारे ?

आपण अनेकदा अनुभवलेले असेल कुणी तुम्हाला बोलवत असेल तर तुम्ही त्या दिशेकडे, तिकडे वारंवार जाता. जर तुम्हाला कोणी बोलावलं नाही तर तुम्ही तिकडे जाल का ? नाही जाणार. अशाच प्रकारे एखादी वस्तु तुम्ही बघितली. बघितल्याबरोबर तुमची नजरच थिजून जाते. नजर वळली तरी पुन्हा-पुन्हा तुम्ही मागे वळून त्या

वस्तुकडेच बघत जाता असं का होतं ठाऊक आहे ? ती वस्तु सुद्धा तुम्हाला बोलावत असते. त्या वस्तुंची कंपनी, त्याचे तरंग असतात ते तुम्हाला आकर्षित करतात. तुम्ही जेव्हा ती वस्तु बघता त्यावेळी केवळ बघता असं नाही त्यावेळी तुम्ही तुमची ऊर्जा तिथे गुंतवून टाकता. आपण जेव्हा-जेव्हा कोणत्या वस्तुला बघतो, शब्द ऐकतो, स्पर्श करतो, स्वाद घेतो, कोणत्या विषयी चिंतन करतो त्यावेळी नेमकं होतं काय ? काय प्रक्रिया घडते ?

### नजरेची गुंतवणूक, पदार्थ सावकार

आपल्याला वाटतं आपणच केवळ वस्तुला स्पर्श केला पण नाही केवळ एवढेच घडत नाही, आपण पण आपली ऊर्जा आपली स्पंदने तिथे सोडतो, जोडतो, गुंतवतो Invest करतो आणि लक्षात घ्या दोन प्रकारच्या ऊर्जा Invest करता. तुम्ही जर प्रेमाने बघितले तर सकारात्मक ऊर्जा गुंतवली जाते आणि द्वेषाने, तिरस्काराने बघितले तर नकारात्मक उर्जा Invest होते. अशा प्रकारे दोन्ही प्रकारच्या ऊर्जा तुम्ही पदार्थावर टाकता आणि त्या वस्तुला आपला सावकार बनवून टाकता. कारण तुम्ही तेथुन काहीतरी घेतले ही आहे आणि दिले ही आहे. मग तो सावकार तुमचा पाठलाग करतो. तुम्ही अनुरागाने पाहिले तर investment होणार आणि द्वेषाने बघितले तरी होणार परंतु तुम्ही केवळ पाहण्यासाठी पाहिले, सहजपणे पाहिले तर No investment गुंतवणूक होणारच नाही आणि गुंतवणूकच झाली नाही तर दुःख-पीडेचा गुंताच होत नाही.

वेदनेचे-दुःखाचे कारण काय आहे ? मी तुम्हाला एक प्रश्न विचारतो-एखाद्या कंपनीचे दर खाली घसरले तर त्याचे दुःख कोणाला होणार ? ज्याने त्या कंपनीचे शेअर घेतले आहे त्याला होणार, नाही घेतले त्याला कशासाठी होणार ? जो शेअर होल्डर आहे त्यालाच हा सारा त्रास ! नाहीतर त्रास होण्याचा काहीएक संबंध येत नाही. मग शेअर बाजार

चढला किंवा घसरला याने आपल्याला काय होणार ? कारण आपली त्यात गुंतवणूकच नाही. आपली गुंतवणूक स्वतःतच करावी.

तर बंधूनो आपण पदार्थ, वस्तुकडे बघतो तेंव्हा वाटते की आपणच त्याला ग्रहण करतो परंतु त्याचेवेळी वस्तुनेही आपल्याला ग्रहण केलेलं असतं. नाती एकतर्फी असतात का ? शक्य नाही. भांडण एकाच बाजूने होते का ? युद्ध एकट्यानेच होते का ? दोन्ही बाजूंनी होते त्याचप्रमाणे वस्तु-पदार्थाबरोबर ही नातं दोन्ही बाजूंनी निर्माण होतं आपल्याकडूनही आणि पदार्थाकडून सुद्धा. होतं काय ? की जर आपण एखाद्या गोष्टीकडे, वस्तुकडे खूप व्याकुळतेने पाहिले तर त्यातून समाधान, तृप्तता लाभत नाही.

आपण बघतच जातो, पाहतच राहतो डोळे थकतात, मिटतात पण मन थकत नाही, मिटत नाही, समाधान पावत नाही. जसे एखादी मालिका आपण पाहतो T.V. वर सिरीयल संपते, डोळे थकतात पण मनात तृप्ती नसते हुरहुर चालूच असते. भोजन करतो, ताटातील अन्न संपते, पोटही भरते पण मन संतुष्ट होत नाही. का होते असे ? काय कारण ?

### पापाची दृष्टी, दुःखाची सृष्टी

कारण एक मात्र राग, अनुराग, आसक्ति यात जी गिधाडाची वृत्ती - नजर - पकड आपल्या अंतर्मनावर आहे त्या गीधदृष्टीमुळे ही सर्व अतृप्तता, असमाधान, असंतोष आहे. या अतृप्तीमुळे व्यक्ती व्याकुळ होतो. त्या व्याकुळतेमुळे तो त्या पदार्थाचा - वस्तुंचा - विचारांचा संग्रह केला म्हणजेच संरक्षण करणे आलेच अशा या चक्रव्यूहात आपली चेतना गुरफटत - फरफटतच जाते. मग त्याच्यामुळे मनाची अशी अवस्था होऊन जाते खाल्ले तरी दुःखी, उपाशी तरी दुःखी, बोलके कुणी - तरी अडचण, नाही बोलले तरी अडचण त्याच्या मनाची द्विधा अवस्था होऊन जाते. मग आता आपण विचार करा की व्यक्तिला जी सुखाची किंवा दुःखाची अनुभूती होते त्यात महत्वाचा

वाटा कुणाचा ? त्याला जबाबदार कोण ? त्या पदार्थाचा किंवा वस्तुचा ? व्यक्तिचा काही दोष नाही. दोष आपल्या दृष्टीचा आहे जर त्या वस्तुकडे, व्यक्तिकडे तुम्ही श्रद्धेच्या, आस्थेच्या दृष्टीने पाहिले तर तृप्तता जाणवेल. समाधान - संतोष लाभेल.

तुम्ही श्रद्धेच्या नजरेने पहाल तर आशीर्वाद मिळतील, अनुरक्तीने पहाल तर रोष प्राप्ती होईल, द्वेषाने पहाल तर दोषच नजरेस पडतील. तुम्ही जगाकडे कोणत्या दृष्टीने पहायचे ते तुम्हीच ठरवायचे आहे. आणि ही दृष्टी ही नजर निश्चितच करण्याचा नियम या अध्यायात आहे. लक्ष देऊन वाचा. बंधूनी वस्तु तुम्हाला दुःखी करीत नाही, जग तुम्हाला कष्टी करीत नाही, संसार तुम्हाला सुखी करीत नाही परंतु या समस्त जगाविषयी तुम्ही लोभ ठेवा अथवा तिरस्कार बाळगा; प्रेमाने बघा अथवा घृणेने बघा या बघण्याच्या दृष्टीनेच तुमची सृष्टी निर्माण होते हे अगदी अटळ सत्य आहे. आजचे सुख उद्याचे दुःख बनल्याशिवाय रहात नाही. आजची प्रीती उद्या भीतीत रूपांतरित झाल्याखेरीज रहात नाही. कारण दृष्टी गिधडाची आहे पण भगवंत वारंवार जागे करीत आहेत की जर आपण जगातील प्रत्येक वस्तू - व्यक्ति - परिस्थिती - पदार्थाकडे श्रद्धेने, अहोभावाने पाहिलेत तर शाश्वत आनंदाची अनुभूती होईल. अखंड आनंदाची प्राप्ती होईल. अशाप्रकारे पाच ही इंद्रियाच्या विषयाची उदाहरणे भगवंतांनी येथे नमूद केली आहे.

### आपली इंद्रिये आपल्या सुख - दुःखाचे कारण

डोळ्यांसाठी उदाहरण दिले आहे. पतंगाचे. ज्योत जळत असते पतंगा आकर्षित होऊन फिरत असतो आणि शेवटी त्या ज्योतीत होरपळून जातो, होरपळणाऱ्या पतंगाला बघून त्या पाकळीचे असे मरण बघून बाकीच्या पाकोळ्या सावध होत नाहीत. स्वतःला वाचवत नाहीत. ज्योतीशिखेवर झेप घेतच राहतात, आकर्षणापासून स्वतःला परावृत्त करीत नाहीत. हे सर्व सत्य समजून घेतले तर आकर्षित होण्या

ऐवजी आस्थेने त्या ज्योतीला पाहून प्रकाशाचा, तेजाचा आनंद होऊ शकतो. आगीत होरपळणे होणार नाही.

दुसरे इंद्रिय आपले कान त्याचे उदाहरण भगवंत देत आहेत हरीण मधुर स्वरांच्या आकर्षणाने शिकाऱ्याच्या जाळ्यात अटकते. साप सुगंधीत वासाने आकर्षित होऊन अडकतो. नाग त्या दिशेने खेचला जातो आणि फसतो. हे झाले घ्राणेंद्रियाचे आकर्षण.

त्याचप्रमाणे रसात आसक्त असल्यामुळे मासा त्या पीठाच्या मागचा काटा बघू शकत नाही आणि विंधला जातो. त्या माशाकडे बघून आजची पिढी आठवते की फास्टफुडमध्ये या पिढीला काटा दिसत नाही. त्यांना ते आकर्षक पीठच दिसते त्यामागील काटा बघण्याची दृष्टी कधी येत नाही. ज्याला त्या पीठामागील काटा दिसला तो जीवनात सुखी झाला. ज्याला तो काटा दिसत नाही त्याच्या जीवनात, तन-मनात तो काटा रूततो - बोचतो अगदी सर्व सुख-आनंद - समाधान चिरून टाकतो. अशी होते रसनेंद्रियामुळे फसगत म्हणून भगवंत सांगतात श्रद्धेची दृष्टी उघडा म्हणजे पिठाच्या मागचा काटा दिसेल, फसगत होणार नाही.

### मुलायम स्पर्श-मरणप्राय वेदना

असेच आपण स्पर्शात ही अडकून जातो. स्पर्श सुखासाठी मात्र मनुष्य काहीही करतो. सापाच्या कातडीपासून बनवलेल्या वस्तु इतर मुलायम प्राण्यांच्या कातडीपासून बनवलेल्या पर्सेस, चपला या सर्वांच्यात कोट्यावधी डॉलरची उलाढाल होत आहे या सर्व वस्तु आसक्तीने आनंदाने घालून आपण मिरवतो पण जर कधी ऐकले किंवा बघितले ना की सापाची कातडी कशी काढतात तर अंगावर काटा येईल.

माणसांतील राक्षसीपणा पुढे रावण ही पाणी भरेल असे वाटते. जीवंत सापाच्या मस्तकावर खिळा ठोकून त्याला टांगले जाते आणि नंतर त्याच्या

पोटावर चिरा देऊन त्यांची त्वचा जीवंतपणी, कातडी सोलुन काढली जाते. अजगराच्या तोंडात नळीने पाणी सोडुन त्याच्या शरीराला फुगवले जाते आणि मग तो जीवंत असतानांच त्याचे कातडे सोलुन काढले जाते. आणि नंतर त्याला असेच तडफडून मरण्यासाठी सोडून दिले जाते. आणि या अनंतवेदना देऊन प्राप्त केलेल्या कातडीपासुन मुलायम वस्तु, लेदर पर्स बनविल्या जातात. ज्या आपणांस आकर्षित करतात. त्यांचा स्पर्श आपल्याला सुखावह वाटतो परंतु हा सुखदायी स्पर्श जीवनात कसा दुःखदायी बनतो हे आपण अंदाज ही लावु शकत नाही आणि जेव्हा या सुखामागचे दुःख दिसायला लागते तेव्हा आपल्या हाती काहीच उरत नाही. विध्वंसाचे चक्रच चालू होऊन जाते, ज्यांना तुम्ही दुःख दिले ते तुमच्यावर परतणारच.

#### आपली नकारात्मकता आपल्याला भोवते

तुम्ही पाहीले असेल एकाच रस्त्याने खुप लोक जात असतात परंतु एका गाडीचा अपघात होतो तर दुसऱ्या गाडीचा होत नाही. अपघात समोरासमोर गाड्यांचा होतो त्याबद्दल मी इथे सांगत नाही लक्षात घ्या की एखादी गाडी सरळ एखाद्या झाडावर जाऊन आदळते किंवा खड्ड्यात पडते आणि ती व्यक्ति संपते.

लक्ष द्या कधी ना कधी येता-जाता त्या पदार्थाबरोबर, जागेबरोबर तुमचे नकारात्मक संबंध स्थापित झाले, विकसित झाले असेल आणि ते नकारात्मक नाते त्याला तिकडे खेचुन नेते आणि जीवन संपवते.

#### निर्जीवावरही करा प्रेम

म्हणुन लक्षात ठेवा दरवाजा लावताना सुध्दा प्रेमाने, श्रद्धेने लोटा, त्याच्यावर राग काढु नका, भांड्यावर, चपला-बुटांवर, भिंतीवर राग काढु नका. कोणत्याही वस्तुवर-पदार्थावर राग काढु नका ती नकारात्मक उर्जा तिथेच साठते आणि एकवेळ येते तेव्हा ती तुम्हाला खेचुन आणते.

म्हणुन भगवंतांनी जड-निर्जीवांबद्दल सुध्दा संयम बाळगण्यासाठी सांगितले आहे. निर्जीवांबद्दल सुध्दा प्रेमाने वागायला हवं पण काही लोक बसल्याबसल्या कागदाचे तुकडे करतात. कपड्यांचे तुस-तुस काढतात. का करतात असं त्यांनाच माहित नसतं पण हे जसं ते करतात त्यांच्या जीवनातही सुखाचे तुस-तुस उसवले जातात, समाधानाच्या चिटोऱ्या-चिटोऱ्या होऊन जातात. आणि मग तेच विचारतात 'आम्ही तर कधीच कुणाचं वाईट करीत नाही आमच्याबरोबर असं का घडलं ?'

याचबद्दल आपणांस एक प्रसिद्ध उदाहरण सांगतो. खूप जणांना औषधाची अॅलर्जी असते काही जणांना काही पदार्थाची अॅलर्जी असते. ज्या औषधाने एखादा माणुस स्वस्थ होतो त्याच औषधाने दुसऱ्याला अॅलर्जी होते. विचार करण्यासारखी गोष्ट आहे असे का होते? कारण एकच. नकारात्मक दृष्टीकोन विश्वभरात कोणत्याही व्यक्ति- वस्तूबद्दल दिव्य दृष्टीकोन ठेवा. देवत्व प्राप्त झाल्याशिवाय राहणार नाही.

भगवंतांनी मूळ सिद्धांत सांगितला की नकारात्मक दृष्टीकोन ठेवला तर दुःख मिळणार. आसक्तीचा, गीद्धदृष्टीचा दृष्टीकोण ठेवला तर काहीकाळ सुखाभास नंतर अतृप्ती, असंतोष वाट्याला येते आणि जी व्यक्ति या दोहोंमध्ये गुंतत नाही नकारात्मक दृष्टीकोन, गीद्धदृष्टी ही अडकत नाही तो दुःखी-व्याकुळ होत नाही. जो श्रध्देच्या, आस्थेच्या दृष्टीने जगाकडे बघतो-जगतो तो समाधिस्थ होतो हाच दुःखमुक्तीचा सरळ-साधा उपाय आहे.

#### मनात भूत की भगवंत

जी गोष्ट इंद्रियांची आहे तशीच मनाची सुध्दा आहे. ज्या प्रकारचे विचार आपल्या मनात चालतात त्याच प्रकारचे विचार आपल्या मनात ताबा घेतात. म्हणूनच बऱ्याच वेळा आपल्याला असं जाणवते की आपल्याला या विचारांचे काहुर बघुन त्यातुन मुक्तता

हवी असते, त्यातुन बाहेर पडण्याची आपली तीव्र इच्छा असते पण आपण विचार मुक्त होऊ शकत नाही त्याचं कारण फक्त एवढंच आहे की विचारांच्या दिशेने प्रथम पाऊल आपणच उचललेलं आहे. एकदा जर आपण त्या विचारांना आपल्याकडे बोलावलं तर मग ते आपल्याकडे बोलावल्या विना सुध्दा यायला लागतात. आपण सुटणं ठरवलं तरी ते आपल्याला सोडत नाही. म्हणून म्हणतात की **भूताला जागे करणे सोपे आहे पण भूताला सांभाळणे फार कठीण आहे. भगवंताला जागे करणे अवघड आहे पण आतला भगवंत जागा झाला की जगणे फार सोपे होते.** म्हणून जागे करण्यापूर्वीच विचार करा कोणाला जागवता आहात ? भूताला की भगवंताला.

#### विचारात तरंगते मन

गंमत अशी होते की आपल्या मनात आधी हळूच एखादा विचार डोकावतो आपण अडवलं नाही, थांबवलं नाही की तो आत शिरतो एकदा तो आपल्या मनात ठाण मांडून बसला की या जगात-ब्रह्मांडात आजूबाजूला त्या विचारांच्या समान जेवढी तरंगे Vibrations कंपनं आहेत ती सर्व मग खेचली जातात, आकर्षित होतात. ते सर्व विचार तरंग मग आपल्या मनाला त्यांच्याच दिशेने खेचून घेतात. मग आता निवड व आवड आपण ठरवायची की आपण चांगल्या विचार तरंगाना ओढायचे की वाईट विचारांना तरंगित करावयाचे. कारण ज्या विचारांकडे आपली ओढ असेल तिकडे आपण ओढले जाऊ. मग आपल्याला वाटते की मला वाईट विचार का येतात ? भगवंत सांगतात प्रथम आपण जे ग्रहण करतो. ग्रहणच केले नाही तर वाईट तरंग ही आपल्याला तरंगित करू शकत नाही. आत्ताच ठरवा की आपल्याला नकारात्मक विचारांना आमंत्रित करून त्या विचित्र चक्रव्युहात फसायचे की सतत सकारात्मक विचारांना तरंगित करून आनंदीत रहायचे. म्हणूनच म्हणतात दिवसाच्या सुरवातीला आणि समाप्तिला तरी शुभतरंग ग्रहण

करावीत-धारण करावीत. ईश्वराचे ग्रहण केले तर तो ईश्वर निरंतर आपल्या पाठीशी उभा राहतो, सकाळीच दूरदर्शन, चहा दर्शनाला गृहण केलं तर सुखाला-शांतीला ग्रहण लागतं. ज्याप्रमाणे इन्द्रियांचा खेळ तसा मनाचा खेळ आहे तो समजून घ्या खेळ जिंकून आनंदाने जगा. कारण मन जिंकणे-जागवणे-जगदिश्वराशी जोडणे कठीण आहे.

#### स्वराचे व गंधाचे फसवे आकर्षण

हत्तीसारख्या मोठ्या प्राण्याला पिंजऱ्यात जेरबंद करायचे असेल किंवा साखळ दंडात जेरबंद करावयाचे असेल तर एक छोटसा उपाय करतात. हत्तीणी असल्याचा आभास असलेले दृष्य तयार केले जाते, हत्तीणीचा गंध तयार केला जातो, हत्तीणीचा स्वर काढला जातो. खाली खड्डा खणलेला असतो वरती सगळी फसवणूक. हत्ती त्या फसवणुकीला बळी पडतो आणि हत्तीणी तिथे आहे समजून येतो आणि खड्ड्यात पडतो आणि मग त्याचा खेळ तिथेच संपतो. आज जाहिरातीच्या माध्यमाने असेच केले जाते. आपल्या मनाचा हत्ती त्यात फसून जातो. बाजारात वेगवेगळे ब्रँड घेतात साबण वगैरे -- आतील सामग्री जवळ-जवळ सारखीच असते फक्त आकार, रंग रूप वेगळं करून टाकतात. माल बनतो एक, लेबल लावले जाते दुसऱ्या कंपनीचे आणि आपण त्यात फसले जातो. असेच हे सुखाभास दाखविणारे सौदागर ठिकठिकाणी आहेत. आपण विकले जायचे की जिंकले जायचे हे आपणच ठरवायचे आहे.

#### दुःख मुक्तीचा मार्ग

प्रमाद म्हणजे काय ? कोठून येतं दुःख ? कारण लक्षात घ्या इंद्रिय तुम्हाला दुःखी करीत नाहीत, गाडीमुळे ही अपघात होत नाही. अपघात होतात ते चालकाच्या-ड्रायव्हरच्या मनात चाललेल्या संकल्प विकल्पामुळे, संभ्रमित मनःस्थितीमुळे विकल्पामुळे गोंधळात पडलेला चालक अपघाताचा शिकार होतो.

त्याचप्रमाणे संकल्प-विकल्पामध्ये भ्रमित झालेल्या मनुष्याचे मन प्रमादग्रस्त होते.

कोणतीही गोष्ट तुम्हाला सुखी अथवा दुःखी करू शकत नाही. शब्द, रूप, रस, गंध स्पर्श यापैकी कुठल्याही कारणामुळे जीवनात पापाची, दुःखाची सृष्टी तयार होत नाही. दुःखाची सृष्टी तयार होते ती आपण ते तसे स्वीकार केल्याने. जर मी ठरवले की या अमुक कारणाने विचलीत-दुःखी होणार नाही तर कुणात ही ती शक्ती नाही की जी तुम्हाला दुःखी करेल. मी जर स्विकार केले की या कारणामुळे मी विचलीत होऊ शकतो तर मात्र तुम्ही विचलीत, दुःखी झाल्याशिवाय राहणार नाही. स्वतःच्या अंतर्मनातील संकल्प, स्वतःची धारणा, या धारणेतुन मुक्त होऊन भगवंत धारणेशी जोडले जाणे महत्वाचे आहे. आपण जर भगवंत धारणेशी जोडले गेलो तर आपली इंद्रिये, आपले मन आपल्यावर वर्चस्व गाजवू शकणार नाही. कारण तेथे सर्व बसलेले आहेत. आणि जर भगवंत धारणेशी जुळलो नाही तर इंद्रिया-मन त्यांच्याकडे आपल्याला वळवल्या शिवाय रहात नाही आणि त्यांच्या वर्चस्वाखाली राहणे म्हणजे रक्षकच भक्षक बनण्यासारखे आहे. ज्याच्याकडून सेवा सुख मिळू शकण्याची शक्यता असते तेथूनच दुःख मिळते. त्याचे मूळ कारण आपलेच संकल्प-विकल्प. आपल्या मनातील अशुभ संकल्पातून, दुष्ट दुर्भावनापूर्ण संकल्पातून जो मुक्त होतो त्याला दुःख भोगावे लागत नाही. जो या दृष्ट संकल्पातून मुक्त होत नाही त्याला देव सुध्दा सुखी करू शकत नाही. आपल्या या अशुभ-दुष्ट संकल्पापासून मुक्त होण्यासाठी भक्तीपूर्ण हृदयाने या अध्यायाची आराधना करूया.

#### परतफेडीचा मार्ग घातक

संत आणि सज्जनासाठी भगवंतानी सांगितले की त्यांनी कुणाला या भावनेतुन, ही कामना होऊन दीक्षा देऊ नये की हा म्हातारपणी माझा आधार बनेल, माझी सेवा करेल, गृहस्थासाठी सुध्दा सांगितले आहे की

आपल्या संततीचे सुध्दा पालन-पोषण या भावनेने करू नका की मी तुला सांभाळले, तू सुध्दा वृद्ध अवस्थेत माझा सांभाळ करावा, आपला भार वहन करावा. मुलांचे लालान-पालन कोड-कौतुक बाळ म्हणूनच करावे. भविष्यात भारवाहक बनतील या स्वार्थाने, भविष्यात हीच मुलं आपला सांभाळ करतील या भावनेने जर त्यांचे पालन-पोषण केले तर अंती पश्चाताप झाल्याशिवाय रहात नाही अशा स्वार्थी भावनेमुळे असीमित दुःख जीवनात निर्माण होईल.

बंधुनो, हा अध्याय वाचला-समजला तर आपण आता संकल्प करूया अहोभावाने निश्चय करूया की जीवनात आपण कुणाला ही काही दिले तर परतफेडीच्या भावनेने देणार नाही. कुणासाठी काही केले, कुणाचे पालन-पोषण केले तर भविष्याच्या सोयीची, सुखाची, भावना न ठेवता करेन. लक्षात ठेवा, आपण जर या स्वार्थ भावनेतून आम्ही मुक्त झालो तर जीवनात दुःख येण्याचा मार्ग बंद होईल.

अशाप्रकारे स्वतःच्याच संकल्प-विकल्पामुळे समस्त विश्व दुःखमय-अशांतीमय आहे आणि या संकल्प-विकल्पातून मुक्त होऊन अंतर्मनात जर श्रद्धेची-समर्पणाची भावना जागृत झाली तर कामगुणांचा क्षय होऊन अक्षय आनंदाची प्राप्ती होते.

अनादीकाळापासून चालत असलेल्या या सर्व दुःखाचा नाश करणारा --- सर्व सुख-मांगल्य प्रकट करणारा, सर्व दुःखापासून मुक्ती देणारा हा मार्ग आपल्याला भगवंताने सांगितला आहे दाखवला आहे, जे या मार्गाची या मंगलमय धर्माची आराधना आणि अनुसरण करतात ते अत्यंत सुखी होतात अशा अनंत सुखाचे स्वामी आपण बनूया. (क्रमशः) ●

जैन समाजात सर्वांत जास्त खपाचे

व लोकप्रिय मासिक

जैत्र जागृति